ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-1* February- 2021
Innovation The Research Concept

स्वतंत्रता के बाद भारत : पं0 दीनदयाल उपाध्याय

India after Independence: Pt. Deendayal Upadhyay

Paper Submission: 03/02/2021, Date of Acceptance: 17/02/2021, Date of Publication: 25/02/2021

पीयूष कुमार श्रीवास्तव
पूर्व शोधछात्र,
समाजशास्त्र,
महात्मा गांधी चित्रकूट
ग्रामोदय विश्वविद्यालय
सतना, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

पण्डित दीनदयाल जी का मानना था कि भारत के विकास के लिए हमें विदेशी नहीं अपितु "भारतीय तकनीकी" का विकास करना होगा। इसके लिए हम पष्चिम में हुए तकनीकी ज्ञान विकास का केवल उस सीमा तक लाभ भी ले सकते हैं जिस सीमा तक वह हमारे राष्ट्र के ठोस विकास के लिए, हमारे संसाधनों, समय व परिस्थितियों के अनुकूल हो। भारत सरकार ने, इस हेतु "भारत में निर्माण" आवाह्न के द्वारा विदेशी निवेशकर्ता को, भारत में उत्पादन संस्थान व प्रशिक्षण संस्थान स्थापित कर, आयात के स्थान पर भारत में ही निर्माण कर निर्माण कर निर्यात के लिए प्रोत्साहित किया है और इन सब तकनीकी ज्ञान एवं कौशलों को हम जबतक देशज ज्ञान एवं कौशलों के साथ सह–संबंधित नहीं कर सकते जब तक हमे हमे दूसरो पर आश्रित रहना ही पड़ेगा। इसलिए भारतीय शिक्षा व्यवस्था की भारत की दृष्टि से ही समझ कर भारतीय ज्ञान एवं कौशलों के माध्यमों से हम देश की आर्थिक तरक्की का सूत्रपात कर सकते हैं। और इस वृहत्तर प्रक्रिया में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावशाली भूमिका हो सकती है।

Pandit Deendayal ji believed that for the development of India, we have to develop "Indian technology" and not foreign. For this we can also take advantage of the technological knowledge development in the West only to the extent that it suits our resources, time and circumstances for the solid development of our nation. The Government of India, for this purpose, has encouraged the foreign investor to export by setting up production institutes and training institutes in India, manufacturing and manufacturing in India at the place of import and all these technical knowledge. And we cannot correlate the skills with the indigenous knowledge and skills until we have to depend on others. Therefore, by understanding the Indian education system from India's point of view, through the medium of Indian knowledge and skills, we can initiate the economic progress of the country. And education can play an important and influential role in this larger process.

मुख्य शब्द : एकात्म मानव दर्शन, भारत तकनीक, भारत का निर्माण
Integral Human Philosophy, India Technique, Making of India.

प्रस्तावना

इस भारतवर्ष को आज हमें स्वरूप देना है। आज उसके स्व को जागृत करना है। जो विकृति आ गई है उसको दूर निकालकर फेंकना है। आज अपनेपन को पहचानकर दुनिया के साथ कंधे के साथ कंधा मिलाकर हमको आगे बढ़ना है। जबसे हम अपने जीवन के स्वामी स्वयं न रहे तब से संसार बहुत बढ़ चुका है। आज न तो हम लौटकर अपने पुराने स्थान से यात्रा प्रारंभ कर सकते हैं और न आज की विकृत अवस्था को ही प्रकृत अवस्था मानकर चल सकते हैं। हमारा सौभाग्य है कि दास्ता की लंबी अवधि में भी अपनी प्रकृति को व्यक्त करने वाले महापुरूष हुए है, फलतः आज हमारे जीवन में कितने ही विकार क्यों न आ गए हों, हमारी प्रकृति पूर्णतः आक्रांत होकर मरी नहीं है। हम अपनी इस प्रकृति की अखंडधारा को पहचाने। उसको शक्तिशाली करके विकृति की अस्वच्छता को प्रकृति की प्रवाहजन्य स्वच्छता से धो डालें और इस प्रकार शक्ति सम्पन्न हो संसार के साथ आगे बढ़े।

अध्ययन का उदेद्श्य

इस अध्ययन का उददेश्य पं0 दीनदयाल के उपाध्याय के स्वतन्त्रता के बाद देश के दिशा कैसी हो उसके बारे मे चिन्तन किया गया है। इस विचार धारा को आत्मसात उसे प्रासंगिक बनाया जा सके।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत की बागडोर नेहरू के हाथो मे आयी। प्रधानमंत्री नेहरू भले ही भारतीय थे परन्तु उनकी सोच अंग्रेजी या कहे उनसे भी ज्यादा अंग्रेजियत वाली ही थी। लिहाजा जहां देश को स्वभाव और स्व–संस्कारो के दम पर आगे बढना था वही वह पर भाव पर संस्कारो की राह चलने लगा।

कांग्रेस ने राजनीतिक स्वतंत्रता तो प्राप्त कर ली परन्तु उसे अभी आर्थिक सामाजिक और नैतिक स्वतंत्रता हासिल करना बाकी था। महात्मा गांधी ने हरिजन के फरवरी 1948 अंक मे लिखा –

"कांग्रेस ने अपनी स्वतंत्रता के प्रारम्भिक और आवश्यक पहलू को हालिस कर लिया था। लेकिन कठिन कार्य अब आयेगा। लोकतंत्र की कठिन चढाई के दौरान इसने अपरिहार्य रूप से ऐसे बेकार खडे कर दिये है जिनसे भ्रष्टाचार पनपता है और ऐसी संस्थाए खडी हो गयी है जो केवल कहने के लिये ही लोकतांत्रिक है। इस अपकारक और बेतुकी बटवार से कैसे मुक्त हुआ जाये।[1]

देश के बटवारे के पक्ष मे दीनदयाल जी भी नही थे। वे अखण्ड भारत के हिमायती थे। पं0 दीनदयाल जी के अनुसार अखण्ड भारत कोई राजनीतिक नारा नही है। बल्कि यह तो हमारे सम्पूर्ण जीवन दर्शन का मूलाधार है।[2]

दीनदयाल जी आगे कहते है। – भारत विभाजन से हमारी किसी समस्या का हल नही हुआ। समस्याए और जटिल हुई है। हिन्दू मुस्लिम समस्या ज्यो की त्यो है। जिसने अन्य अनेको राष्ट्रीय समस्याओ को जन्म दिया है।[3]

मूलतः देखा जाये तो देश के बटवारे के पक्ष मे कोई भी नही था। डा0 राजेन्द्र प्रसाद जी जो कि गांधी जी के निकट सहयोगी थे उन्होने स्पष्ट शब्दो मे कहा है '– महात्मा जी ने न तो इस बंटवारे को ठीक समझा और न उस सिद्धान्त को माना जिसके बल पर मुस्लिम लीग यह दावा करती है। कि हिन्दू और मुसलमान दो राष्ट्र है। इसलिये वे कभी एक साथ नही रह सकते है। महात्मा जी इस दो राष्ट्र की नीति को घातक समझते थे।[4]

लेकिन जो होना था वही हुआ। राष्ट्र दो टुकडो मे बट चुका था। अब मुख्य समस्या थी कि देश को कैसे संचालित किया जाए। उसकी रीति– नीति का निर्धारण कैसे हो। काग्रेस की रीति – नीति से आर0एस0एस0 की रीति– नीति भिन्न थी। जिससे काग्रेस आर0एस0एस0 को हेय दृष्टि से देखती थी।

पं0 नेहरू संघ के स्पष्ट विरोधी थे। उन्होने कहा है – "स्पष्ट रूप से मेरी सरकार आर0एस0एस0 पर बहुत विश्वास नही करती है। हम उस पर बहुत सख्त निगरानी रखे हुये है।[5]

जब प्रधानमंत्री नेहरू की आर0एस0एस0 पर ऐसी विचारधारा हो तो दूसरे के बारे मे क्या कहा जा सकता है। सरदार पटेल कहते है।– "काग्रेस के जो लोग सत्ता मे है वे सोचते है कि अपनी सत्ता के बल पर आर0एस0एस0 को समाप्त करने मे समर्थ हो जायेगे। डंडे से आप किसी संगठन को नही दबा सकते। आखिर डंडा चोरो के लिये है। इसका उपयोग सार्थक नही होगा। अतः आर0एस0एस0 के लोग कोई चोर या डाकू तो है नही। वे अपने देश को प्यार करते है। केवल उनकी विचार पद्धति भिन्न है। कांग्रेस जन स्नेह से उन पर विजय प्राप्त कर सकते है।[6]

काग्रेस द्वारा संघ के फैलाये जा रहे विद्वेष के प्रति डा0 हेडगेवार ने कहा था – संघ किसी से द्वेष नही करता है। वह सिर्फ हिन्दुओ को संगठित करेन का कार्य करता है। इसका उददेश्य राष्ट्र , धर्म , और संस्कृति का संरक्षण करना है। फिर इसे जब साम्प्रदायिक कहा जाता है तो मुझे घोर आश्चर्य होता है।[7]

स्वतंत्रता के पश्चात जहां कांग्रेस का आर0एस0एस0 के प्रति विद्वेष बढता ही जा रहा था वही गांधी जी की 30 जनवरी 1948 को हत्या के पश्चात तो आर0एस0एस0 पर काग्रेस ने प्रतिबंध ही लगा दिया। इसी के बाद 15 दिसम्बर 1950 ई0 को सरदार पटेल का भी देहावसान हो गया। जिसके कारण नेहरू जी पर अब कोई लगाम लगाने वाला काग्रेस मे नही बचा क्योकि नेहरू को चुनौती देने की क्षमता कांग्रेस मे मात्र पटेल के पास थी।

इसी दौरान राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ मे 21 अक्टूबर 1951 को दिल्ली मे श्यामा प्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता मे अखिल भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई। राष्ट्रीय जन सघ की स्थापना के बाद भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का अपना पारम्परिक स्वरूप बना रहा। पं0 दीनदयाल जी को जनसंघ का मंत्री बनाया गया।

पं0 दीनदयाल जी जनसंघ के बारे मे कहते है – भारतीय जनसंघ एक अलग प्रकार का दल है। किसी भी प्रकार सत्ता मे आने वालो का यह दल नही है। जनसंघ एक दल नही वरन एक आदोलन है। यह राष्ट्रीय अभिलाषा का स्वयं स्फूर्त निर्झर है। यह राष्ट्र के नियत लक्ष्य को आग्रह पूर्वक प्राप्त करने की आकांक्षा है।[8]

दीनदयाल जी का जनसंघ के प्रति समर्पण को देखकर ही डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था – यदि मुझे दो दीनदयाल मिल जाये तो मै भारतीय राजनीति का नक्शा बदल दूं।[9]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कांग्रेस सरकार की मुख्य विपक्षी पार्टी के रूप मे जो उभरा वह उपाध्याय द्वारा स्थापित जनसंघ था। जनसंघ ने स्थापना के साथ ही राष्ट्रीय मुद्दो का प्रखरता के साथ उठाने का प्रयास किया। जनंसघ की जब स्थापना हुई तब यह नया दल संघ के द्वारा स्वीकार किया गया हिन्दू राष्ट्र सिद्धान्त एवं आदर्शवाद के अनुकूल हो इसका उपाध्याय जी ने ध्यान रखा।

जनसंघ की स्थापना के समय कुल 15 प्रस्ताव पारित हुये थे उसमे से 7 केवल दीनदयाल जी ने रखे – जिसमे मुख्य थे – दक्षिण अफ्रीका मे रंगभेद का विरोध, 2. भारत मे स्थित विदेशी उपनिवेश 3. कर नीति तथा बहूसूत्री विक्रीकर 4. चुनाव नियमो मे संशोधन 5. पुनर्वास 6. पंचवर्षीय योजना 7. सांस्कृतिक पुनरूत्थान ।[10]

जनसंघ किस प्रकार से अन्य दलो से भिन्न है। इस पर दीनदयाल जी कहते है कि "भारतीय जनसंघ एक अलग प्रकार का दल है। किसी भी प्रकार सत्ता मे आने की लालसा वाले लोगो का यह झुंड नही है। जनसंघ एक दल नही आदोलन है। यह राष्ट्रीय अभिलाषा का

स्वयं स्फूर्त निर्झर है। यह राष्ट्र के नियत लक्ष्य को आग्रह पूर्वक प्राप्त करने की आकांक्षा है।[11]

देश तो आजाद हो चुका था। दीनदयाल जी आजादी के बाद देश को नया मोड़ देना चाहते थे। आजादी के बाद देश मे अव्यवस्था को दीनदयाल जी दूर करना चाहते थे। वे देश का निर्माण हिन्दुत्व जीवन पद्धति पर आधारित हो ऐसा सोचते थे। दीनदयाल जी के एकात्म मानव दर्शन का आधार ग्रंथ ही वेद उपनिषद , गीता एवं अन्य प्राचीन ग्रथ थे। वे प्राचीनता को आधुनिकता के साथ आत्मसात, एकात्म करना चाहते थे।

दीनदयाल जी स्वतन्त्रता के बाद एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना चाहते थे। जहां सबसे निचले व्यक्ति का भी जीवन स्तर ऊपर उठ सके। दीनदयाल जी कहते है। उन्हे भगवान ने हाथ तो दिये है। परन्तु वे स्वयं उत्पादक नही बन सकते। उनके लिये शासन से पूंजी का सहयोग आवश्यक है। श्रम और पॅूजी के सहयोग से ही उनका जीवन उन्नत हो सकता है।

इस प्रकार हम देखते है कि दीनदयाल जी स्वतंत्रता के प्रश्चात एक ऐसे समाज का निर्माण चाहते थे। जिसमे एकात्मता हो।[12]

निष्कर्ष

हमे आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक स्वतंत्रता चाहिए। स्वतंत्रता मे आत्मानुभूति का होना महत्वपूर्ण है। कारण यह है कि संस्कृति, शरीर मे प्राण की भांति राष्ट्र – जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे अनुभव की जा सकती है। प्रकृति पर विजय प्राप्त करते समय मानव अपनी जीवन – दृष्टि से जो रचना करता है उसमे उसकी संस्कृति दिखाई देती है। संस्कृति कभी भी गति–शुन्य नही होंती। नदी के प्रवाह की भांति वह गतिमान रहती है। उस प्रवाह के साथ ही उसके कतिपय गुण–विशेषो का भी निर्माण होता है यह सांस्कृतिक दृष्टिकोण उसके साहित्य, कला, दर्शन, स्मृति–शास्त्र तथा सामाजिक इतिहास, सब मे व्यक्ति होता रहता है। हम स्वतंत्र हो गये है। तो संस्कृति का यह प्रवाह फिर से बह निकलना चाहिए। राष्ट्रभक्ति की भावना भी इसी संस्कृति से उत्पन्न होती है और यही संस्कृति राष्ट्र की सीमाओ को लांघकर मानव–जाति के साथ उस राष्ट्र की एकात्मता का नाता जोडती है। इसलिये सांस्कृतियो स्वतंत्रता परमावश्यक है। उसके बिना स्वतंत्रता व्यर्थ होगी और वह टिकेगा भी नही।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *पृ – 13 पान्चजन्य , 14 अगस्त 2016 ई0*
2. *पृ – 17 डा0 प्रयाग नारायण त्रिपाठी : महात्मा गांधी और पं0 दीनदयाल उपाध्याय के जीवन दर्शन मे साम्य : लोकहित प्रकाशन , लखनऊ*
3. *पृ –17 तथैव*
4. *पृ – तथैव*
5. *पृ – 64 डा0 महेश चन्द्र शर्मा : पं0 दीनदयाल उपाध्याय : कर्तव्य एंव विचार : प्रभात पेपर बैक्स नई दिल्ली।*
6. *पृ – 64 तथैव*
7. *पृ – 8 डा0 प्रयाग नारायण त्रिपाठी महात्मा गांधी और पं0 दीनदयाल उपाध्याय के जीवन दर्शन मे साम्य : लोकहित प्रकाशन लखनऊ*
8. *पृ – 163 कौशल किशोर मिश्रा : शिवाली अग्रवाल : पं0 दीनदलया उपाध्याय का राजनीतिक दर्शन : अनु बुक्स दिल्ली।*
9. *पृ – 162 तथैव*
10. *पृ – 75 50 महेश चन्द्र शर्मा : पं0 दीनदयाल उपाध्याय : कर्तव्य एंव विचार : प्रभात पेपर बैक्स नई दिल्ली ।*
11. *पृ – 77*
12. *पृ – 166 डा0 विश्वामित्र पाण्डेय : महात्मा गांधी डा0 राम मनोहर लोहिया और पं0 दीनदयाल उपाध्याय के समाजवादी विचार निर्मल पब्लिकेशन दिल्ली – 94*